पंडित मदन मोहन मालवीय

जन्म : 25 दिसम्बर, 1861 निधन : 12 नवम्बर, 1946

- जब तक ब्रह्मचर्य के उत्कृष्ट नियमों का पालन न होगा, गृहस्थाश्रम के उच्च पथ का अवलम्बन न किया जाएगा और जब तक हम लोगों का चरित्र उत्तम रूप से गठित न होगा, तब तक कभी राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करने के योग्य न होंगे।
- किसी मनुष्य अथवा किसी जाति की तब तक उन्नति नहीं हो सकती, जब तक वह अपनी वर्तमान दशा से असन्तुष्ट होकर उसे सुधारने का यत्न न करे। वर्तमान अवस्था से असन्तोष और उन्नति की इच्छा, ये दो उन्नति के मूलमंत्र हैं।
- स्वतन्त्रता वह है जिसके सहारे मनुष्य अपनी स्थिति को बदल सके और व्यर्थ और हानिकारक वस्तुओं, आदतों, व्यसनों को अलग कर सके – जैसे सर्प अपने केंचुल को फेंक दिया करते हैं।
- जिन देशानुरागी पुरुषों में तपश्चर्या नहीं, जो मुसीबतों, विघ्नों और आफतों का मुकाबला करने से घबराते हैं, जो द्वंद्वों को सहन नहीं कर सकते, जो भूख और प्यास, सर्दी और गर्मी, धूप और छाँह, कोमल और कठोर, मीठा और खट्टा आदि द्वंद्वों के दास हैं वे संसार रूपी युद्ध में कदापि कृतकृत्य नहीं हो सकते।
- तप से ही धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष की प्राप्ति होती है। तप से ही कणाद, गौतम, व्यास आदि महर्षियों ने उपनिषदादि शास्त्रों और दर्शन ग्रंथों की रचना की थी। तप से न्यूटन, डारविन और कॉन्ट आदि विद्वानों ने वैज्ञानिक संसार की काया पलट दी है... अभिप्राय यह है कि तप से अभ्युदय और नि:श्रेयस् , स्वर्ग और मोक्ष, धन और संपत्ति, नाम और यश, बल और पराक्रम, सुख और शांति, राज्य और अधिकार सब की ही प्राप्ति होती है और होगी।
- हमारा तात्पर्य शिक्षा से हृदय और मन की सारी शक्तियों का सम्यक् रूप से विकास और उनकी पूर्ण पुष्टि से है। स्त्रियों की ईश्वर की दी हुई विपुल शक्ति को जीवन के उच्च आदर्श के सामने लाकर सुगठित करना और कर्मशील बनाना ही हमारा उद्देश्य है और यही हमारे जातीय जीवन का सुख और कर्तव्य कर्म है।

पंजीयन संख्या/RNI No.—UPHIN/2017/74904 ISSN : 2581–687X

शैक्षिक उन्मेष

शिक्षा जगत की शोध एवं विचार केंद्रित पत्रिका

खंड–2, अंक–1; आश्विन–मार्गशीर्ष, 2075/अक्टूबर–दिसंबर, 2018

संरक्षक

डॉ. कमल किशोर गोयनका
एम. ए., पी–एच. डी.
उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा
ई–मेल : kkgoyanka@gmail.com

परामर्श मंडल

प्रो. मथुरेश्वर पारीक
एम. ए., एम. एड., पी–एच. डी.
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
ई–मेल : m.pareek1952@gmail.com

प्रो. आर.पी. पाठक
एम. ए., एम. एड., पी–एच. डी.
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ
नई दिल्ली
ई–मेल : pathakoham@gmail.com

प्रो. अरविंद कुमार पांडेय
एम. ए., एम. एड., पी–एच. डी.
डीन, फैकल्टी ऑफ एजूकेशन
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
ई–मेल : arvindkumarpandey62@gmail.com

डॉ. अशोक सिडाना
एम. ए., एम. एड., पी–एच. डी.
प्राचार्य–श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय,
सी.टी.ई., जयपुर
ई–मेल : sidanaashok@gmail.com

डॉ. नीरा नारंग
एम. ए., एम. एड., पी–एच. डी.
एसोसिएट प्रोफेसर, केंद्रीय शिक्षा संस्थान
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
ई–मेल : nnarang2611@rediffmail.com

प्रकाशन सलाहकार–डॉ. स्वर्ण अनिल
एम. ए., पी–एच. डी.
केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र
ई–मेल : swarnailkhs16@gmail.com

प्रधान संपादक

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय
एम. ए., पी–एच. डी.
निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई–मेल : nkpandey65@gmail.com

संपादक–प्रो. बीना शर्मा
एम. ए., एम. एड., पी–एच. डी.
विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग
ई–मेल : dr.beenasharma@gmail.com

सह संपादक–चंद्रकांत कोठे
एम. ए., एम. एड. नेट एवं स्लेट (शिक्षा)
सहायक प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई–मेल : kothe2009@gmail.com

संपादक मंडल

प्रो. कैलाश चन्द्र वशिष्ठ
एम. ए., एम.एड., पी–एच.डी.
अधिष्ठाता–शिक्षा संकाय, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट
ई–मेल : kcvashishtha@gmail.com

प्रो. कल्पलता पांडेय
एम. ए., एम.एड., पी–एच. डी.
पूर्व अध्यक्ष एवं डीन (शिक्षा संकाय)
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
ई–मेल : p.kalplata@gmail.com

डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर
एम. एससी., एम. एड,
नेट (शिक्षा), पी–एच. डी., अध्यक्ष, शिक्षा विभाग
म.गां.अंत. वि.वि., वर्धा
ई–मेल : gkthakur11@gmail.com

प्रो. हरिशंकर
एम. ए., एम. एड., पी–एच. डी.
विभागाध्यक्ष, दूरस्थ शिक्षा विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई–मेल : shankaruk30@gmail.com

प्रो. अरविंद झा
एम. ए., एम. एड., पी–एच. डी.
डीन, स्कूल ऑफ एजूकेशन
डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ
ई–मेल : drarbindjha1@gmail.com

अध्यापक शिक्षा विभाग

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा–282005

क्र. सं.	आलेख का शीर्षक	लेखक का नाम	पृ. सं.
10.	भाषा में अर्थ की प्रकृति और काव्य–बोध	टीना यादव	116–131
11.	सिक्किम में हिंदी शिक्षण की समस्याएँ	छुकी लेप्चा	132–137
12.	परीक्षण तथा मूल्यांकन में प्रश्नों की भूमिका	अरविंद कुमार गौतम	138–145
13.	शिक्षा में भारतीयता	अर्चना दुबे	146–151
14.	शिक्षा का जनतांत्रिक स्वरूप	उमेश चन्द्र	152–157
15.	डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचार	विकाश कुमार	158–164
		इस अंक के लेखक	165
		सदस्यता फार्म	167

पं. महामना मदनमोहन मालवीय का शिक्षा दर्शन

पंडित मदनमोहन मालवीय का जन्म 25 दिसंबर, 1861 ई. को (पौष–कृष्ण अष्टमी, संवत् 1918 वि., बुधवार) प्रयाग में हुआ था। इनके पूर्वज मालवा से आकर प्रयागराज में बस गए थे। इनके पितामह पंडित प्रेमधर जी संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे। श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। उन्हें 'महाभागवत' के नाम से प्रतिष्ठा प्राप्त थी। उनके पास श्रीकृष्ण की दो फुट ऊँची सांवले रंग की प्रतिमा थी। उसकी नियमित पूजा–उपासना करते थे। मालवीय जी के पिता का नाम श्री पंडित ब्रजनाथ चतुर्वेदी था। ब्रजनाथ जी भी अपने पिता की तरह ही श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक और संस्कृत के विद्वान थे। संगीत में अच्छी रुचि थी। सुमधुर वंशी वादन करते थे। श्रीमद्भागवत की अच्छी कथा कहते थे। प्रसिदध व्यास के रूप में उनकी चर्चा और प्रतिष्ठा थी। भक्ति का प्रतिपादन करने वाला एक ग्रंथ 'सिद्धांत दर्पण' भी उन्होंने लिखा। कथावाचक होते हुए भी वे दानग्रहण नहीं करते थे। कथा पर जो चढ़ावा चढ़ जाता था, उसी से संतोष कर परिवार का भरण–पोषण करते थे। माता जी का नाम मूना देवी जी था। वे अत्यंत कोमल हृदय, सरल और परदुखकातर स्वभाव की थीं। पंडित मदनमोहन मालवीय जी के व्यक्तित्व पर पितामह, पिता और माताजी के व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव पड़ा। मालवीय जी ने अपने पचहत्तरवीं वर्षगाँठ पर इस प्रभाव की चर्चा करते हुए कहा था कि "मेरे पितामह, पितामही, पिता और माता बड़े धर्मात्मा, सदाचारी और निःस्वार्थी ब्राह्मण थे, उन्हीं के प्रसाद से मैं इतना काम कर सका हूँ।" उन्होंने अपने बाल्यावस्था में यह तय कर लिया था कि मैं ऐसा कोई काम नहीं करूँगा जिसे मैं अपने माता–पिता से न कह सकूँ। इस संकल्प के कारण उन्हें बहुत लाभ मिला। उन्होंने इस बात को विद्यार्थियों को बताया कि 'इस नियम से मैं कई पापों से बचा, मुझे शक्ति मिली और मेरा जीवन उत्साह और दिव्य ज्योति से उज्ज्वल हुआ।'

मालवीय जी का बचपन गहन धार्मिक संस्कारों से प्रारंभ हुआ। आठ वर्ष की अवस्था में उनका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। गायत्री मंत्र की दीक्षा स्वयं उनके पिताजी ने दी। उन्होंने जीवन पर्यंत प्रातःकाल और सायंकाल की संध्या की। विद्यालय जाने

परीक्षण तथा मूल्यांकन में प्रश्नों की भूमिका

–अरविन्द कुमार गौतम

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के व्यवहार में परिवर्तन लाना है। यह परिवर्तन उसके ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा संकल्पनात्मक पक्षों से संबंधित होता है। विद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले विविध विषयों का महत्व इसी दृष्टि से है। प्रत्येक विषय की शिक्षा का उद्देश्य अलग–अलग होता है किंतु शिक्षा का अंतिम लक्ष्य विद्यार्थी के व्यवहार में अभीष्ट परिवर्तन लाना है। इस प्रकार से शिक्षा के उद्देश्यों तथा शिक्षण संस्थाओं में पढ़ाए जाने वाले विषयों के उद्देश्यों में घनिष्ठ संबंध होता है। विद्यार्थी की अंतर्निहित शक्तियों का विकास करना शिक्षण प्रक्रिया का प्रमुख ध्येय कहा जाता है। विद्यार्थी की शक्तियों, क्षमताओं एवं प्रवृत्तियों के विकास की कहानी ही शिक्षा है। जहाँ एक ओर हम सुनियोजित ढंग से विद्यार्थी के विकास की दिशाओं एवं गतिविधियों का स्वरूप निर्धारण करते हैं वहीं दूसरी ओर शिक्षक की हैसियत से हमारा यह भी कर्तव्य है कि विद्यार्थी की शैक्षणिक उपलब्धियों को शिक्षण प्रक्रिया एवं उसमें प्रयुक्त उपकरणों का मूल्य वैज्ञानिक रीति से आंकें।"[1] शिक्षा के क्षेत्र में तेजी से बदलाव हो रहा है शिक्षण पद्धतियों में नयी तकनीकों का विकास हो रहा है। साथ ही मूल्यांकन के क्षेत्र में भी परिस्थितियाँ बदल रही हैं। आजकल मूल्यांकन को शिक्षा का अंतिम लक्ष्य न समझकर शिक्षा का जुड़ा हुआ अंग माना जाता है और इसलिए आजकल सत्र के आखिर में एक अंतिम परीक्षा को ही महत्वपूर्ण न मानकर कक्षा में समय–समय पर परीक्षायें होती रहती हैं और उसके अंक भी अंतिम परीक्षा में जोड़े जाते हैं।

आजकल परीक्षण तथा मूल्यांकन में जिस मूल्यांकन प्रणाली का प्रयोग हो रहा है वह बहुत हद तक अपूर्ण और अपर्याप्त है। मूल्यांकन कार्य से जुड़े हुए लोग भी इसकी आधारभूत अवधारणाओं को पूरी तरह से आत्मसात नहीं कर पा रहे हैं। किस चीज का मूल्यांकन करना है ? किस तरह मूल्यांकन करना है ? और मूल्यांकन क्यों करना है ? इन प्रश्नों के उत्तर मूल्यांकनकर्ताओं के समक्ष पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है। विशेषतः भाषा शिक्षण के क्षेत्र में मूल्यांकन की शिक्षा के चरम उद्देश्य अर्थात शिक्षार्थी के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास से संबद्ध करके नहीं देखा जा रहा है। विद्यार्थी के

व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के दो आयाम हैं–शैक्षणिक उपलब्धि और अशैक्षणिक उपलब्धि अर्थात जीवन के व्यावहारिक क्षेत्र में उसका प्रदर्शन।

मूल्यांकन करते समय शिक्षक को इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि वह विद्यार्थी के व्यक्तित्व के किस गुण का मापन करना चाहता है और इसके लिए उसे किस प्रकार के प्रश्न का प्रयोग करना है। विद्यार्थी के व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों की जांच करने के लिए अलग–अलग प्रश्नों का प्रयोग किया जाना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में अपेक्षित सुधार लाने की दृष्टि से यह नितांत महत्वपूर्ण हैं, शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन तीनों ही शिक्षा व्यवस्था के तीन प्रमुख स्तंभ हैं। तीनों ही घटक इस प्रकार से एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं कि अगर किसी को अलग करने की कोशिश करें तो उसका दुष्प्रभाव बाकी दो घटकों पर पड़ता है। शिक्षा व्यवस्था में वे तीनों ही घटक बहुत महत्वपूर्ण हैं तथा किसी एक को अधिक महत्वपूर्ण नहीं कह सकते हैं। अगर हम किसी एक घटक को अधिक महत्व देते हैं तो उसका असर बाकी दो घटकों पर पड़ता है। लेकिन आमतौर पर यह देखा जाता है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण एवं अधिगम को जो महत्व या स्थान मिलता है वह परीक्षण को नहीं मिलता है। अगर हम गौर से देखें तो पायेंगे कि एक अध्यापक पूरे वर्ष अध्यापन कार्य करता है, इस दौरान विद्यार्थी में अधिगम प्रक्रिया होती है लेकिन अधिगम कितनी मात्रा में हुआ इसका परीक्षण वर्ष में सिर्फ एक बार ही किया जाता है, अध्यापन कार्य पूरा हो जाने के पश्चात सत्रांत का वार्षिक परीक्षा के रूप में अर्थात विद्यार्थी की एक वर्ष की मेहनत को एक दिन में आंक लिया जाता है तथा उसी आधार पर उसे उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण कर दिया जाता है। इस प्रणाली के कुछ नकारात्मक पहलू हैं जैसे कि इस प्रकार के परीक्षण में छात्र पर अनुचित दबाव आ जाता है, परीक्षा उसके लिए एक बोझ लगती है तथा परीक्षण के दौरान छात्र एक मानसिक तनाव से गुजरता है और कई बार तो ऐसा होता है कि इसका प्रभाव उसके बाकी कार्यों पर भी पड़ने लगता है।

शिक्षा एक गतिशील क्रिया है, अतः इसके अंतर्गत पाठ्यक्रम, पाठ्य–पुस्तकों, शिक्षण विधियों तथा शैक्षणिक उपकरणों की व्यवस्था इस प्रकार की जानी चाहिए, जिसमें कक्षा में विद्यार्थियों को मानसिक चुनौतियाँ प्राप्त हों और वे सक्रिय ढंग से सीखने की क्रियाओं तथा अनुभवों की ओर उन्मुख हो सकें इसी प्रकार परीक्षण के क्षेत्र में भी इस प्रकार की व्यवस्था की जानी चाहिए। जिससे विद्यार्थी को परीक्षण एक बोझ